इन्टरव्यू-७

प्र: आप मजदूरी करते हैं ?
ज: हां।

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम रिज़वान है।

प्र: आपकी कितनी कमाई हो जाती है महीने में ?
ज: वहीं, हजार बारह सौ।

प्र: आपका अपना करघा नहीं है आप मजदूर हैं ?
ज: हां।

प्र: अच्छा देखने में ऐसा लगता है कि मजदूरों को इस बात का फायदा होगा कि एक जगह काम नहीं मिला तो दूसरी जगह काम मिल गया तो इससे करघा जिनके पास है उससे आपकी स्थिति बेहतर होगी ऐसा है क्या ?
ज: हम लोगों को कोई फायदा नहीं है।

प्र: ऐसा कभी हुआ है कि बहुत दिन तक आपको काम ही नहीं मिला हों ?
ज: हां
रूकावट
बहुत बार होता है। 10-10, 15-15 दिन से लेकर दो-दो महिना बैठे रहते हैं। फिर कर्जा लेकर काम चलाते।

प्र: कर्जा कहां से लेते हैं ?
ज: अरे अगल-बगल से और क्या अपने रिश्तेदार से लेते हैं।
रूकावट
पावर लूमों को असर है यह सब, पावर लूम से ज्यादे फर्क पड़ा है। जो डिजाइन महीने में बनती थी वो पड़ेगा। तो काम में कमी ही ना होगी अब जिसे करना है करे जिसको नहीं करना है काम बंद कर दें।

शुरू
प्र: आपका अपना करघा था ?
ज: नहीं (संकेत)

प्र: बाप दादा के जमाने से मजदूरी कर रहे हैं ?
ज: हां

प्र: अपना करघा लगाने की नहीं सोचते ?

ज: कहां से सोचे एक करघा लगाने से 6-7 हज़ार रुपया लगता है।

प्र: आपके घर के सब लोग मजदूरी पर ही बिनते हैं ?
ज: हां सब लोग।

प्र: घर में कितने लोग हैं जो बुनकारी में लगें हैं ?
ज: तीन लोग।

प्र: आपका अकेले 1 हजार रुपया महीना आमदनी होती है कि सबका मिला कर ?
ज: नहीं एक आदमी का कमाई है।
रूकावट
बीवी है बच्चे है सब न हैं हजार रुपये में कहां से चलेगा किसी-किसी तरह से खर्चा चलता है।
शुरू
हज़ार रुपया महीना में क्या होगा।